आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 04 जून 2023, अंक – 04

विशेष संपादकीय

गुड लक गर्ल्स

– *दिनेश के सिंह*

नई उमंग के नये सपने और जिसका नतीजा मौत हो तो इससे दुर्भाग्यपूर्ण भला क्या होगा? आये दिन जिस तरह से प्रेमियों के द्वारा लड़कियों की हत्या की खबरें बढ़ती जा रही हैं, इससे ज़्यादा शर्मनाक, खतरनाक और घिनौना कृत्य कुछ नहीं हो सकता। जो लड़कियां नई उम्र में सही-गलत के बीच अंतर नहीं कर पातीं वो ही रिश्ते के नाम पर किसी ऐसे अपराधी के प्यार में पड़ जाती हैं, जिसका अंत सुनकर किसी का भी कलेजा कांप जाए। मीठी-मीठी बातें करके लड़कियों को अपना दीवाना बनाकर उनका इस्तेमाल करना और फिर एक दिन मौत के घाट उतार देना इससे अमानवीय कुछ भी नहीं। कानून और सरकार अपना काम करती रहेगी। लेकिन, ऐसे समय में लड़कियों के साथ-साथ उनके माता-पिता को भी सजग, सचेत रहते हुए समझदारी से उनकी परवरिश करने की आवश्यकता है। अगर परिवार में लड़कियों को प्रेम मिले, सम्मान और बराबरी का एहसास दिया जाए। परिवार के छोटे बड़े निर्णयों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाए तो संभव है कि ये लड़कियां अपने परिवार पर भरोसा कर सकेंगी। बात-बेबात अगर उन्हें डांटा जाए तो ऐसे में बहुत संभव है कि ये लड़कियां घर के बाहर सुकून तलाशेंगी। यह स्तिथि फिर खतरनाक हो सकती है। दूसरी बात कि अगर लड़कियों को भी लड़कों की तरह करियर पर फोकस रखने में हम मदद कर सकें तो उन्हें भी इस बात का एहसास बना रहेगा कि उन्हें जीवन में कुछ करना है। ऐसी लड़कियों के भी भटकने की संभावना कम ही होती है। तो कुल मिलाकर एक अच्छी और जिम्मेदारी भरी परवरिश देकर हम अपनी बेटियों को बचा सकते हैं। साथ ही उन्हें हम इतनी आज़ादी भी दें कि वो घुटन महसूस न कर सकें। एक समय के बाद परिवार की आर्थिक-सामाजिक स्तिथि से भी उनका परिचय कराते रहें ताकि उन्हें हमेशा यह ध्यान रहे कि उन्हें विरासत में क्या मिला है और अगली पीढ़ी को वो विरासत में क्या देना चाहेंगी। आज मोबाइल और इंटरनेट के युग में भटक जाना बहुत आसान है। इसलिए यह जरूरी है माता-पिता अपनी बातों से ज्यादा अपने आचरण से अपने बच्चों को प्रेरित करते रहें। इसी में उन लड़कियों की भलाई है। बाकी प्यार के बारे में यह कहा जाता है कि ये कभी भी किसी को भी किसी से भी हो सकता है। अपनी बच्चियों को इतनी गहराई और समझ ज़रूर दें कि वो अपने प्रेमी का चुनाव करते हुए उसकी नीयत और दृष्टि को पहचान सकें।

आधी आबादी संडे का यह अंक आपको कैसा लग रहा है। आप अपनी राय हमें ज़रूर बताएँ। आप मुझे सीधे मेल भी कर सकते हैं। हमारा मेल आईडी है- aadhiaabadisunday@gmail.com

‘सेक्स बना खेल’, अब चैंपियनशिप की है तैयारी... तुम्हारी है तुम ही संभालो ये दुनिया!

■ हीरेंद्र झा

शुक्रवार को जब सोशल मीडिया पर इस ट्रेंडिंग न्यूज़ पर मेरी नज़र पड़ी तो मैं चौंक गया। ख़बर थी कि स्वीडन में सेक्स को खेल का दर्ज़ा दे दिया गया है और पहले सेक्स चैंपियनशिप की तैयारी भी पूरी हो चुकी है। आठ जून को होने वाले इस मुकाबले में बीस से ज्यादा देशों के प्रतिभागी भाग लेने वाले हैं। कई सप्ताह तक चलने वाले इस आयोजन में विनर का फैसला जज और पब्लिक वोटिंग के जरिए होगा। इसमें भाग लेने वाले खिलाड़ियों को रोज छः घंटे परफ़ॉर्म करना होगा। जिसमें सेक्स के जितने रूप हैं वो सब नज़र आयेंगे। यह ख़बर कोई मामूली ख़बर नहीं है। ऐसा इतिहास में पहली बार होने जा रहा है, इसलिए इसके बहाने कुछ ज़रूरी विषयों को समझ लेना महत्वपूर्ण है।

दरअसल हमारे समाज में सेक्स को लेकर जो पागलपन है, वह किसी से नहीं छुपा है। पूरी दुनिया पॉर्न देखती है और भारत पॉर्न देखने वाले देशों में सबसे आगे है। कहना न होगा कि सेक्स का बाज़ार बहुत बड़ा है और लोगों के मनोविज्ञान को पकड़ते हुए बाज़ार ने उनकी कुंठाओं और आकांक्षाओं को भुनाया भी है। इसी का असर है कि आज सेक्स चैंपियनशिप जैसे आयोजन शुरू हो चुके हैं। अगर दुनिया के किसी हिस्से में हलचल होती है तो दुनिया के दूसरे देशों पर भी इसका असर होता है। जब इस चैंपियनशिप की ख़बर हम तक पहुँच गई तो क्या इंस्टा वाइरल रील के समय में इसके वीडियो हम तक नहीं पहुँच सकेंगे? बिल्कुल पहुंचेंगे। और मैं नहीं जानता कि इस सेक्स चैंपियनशिप में जो दिखाया जाने वाला है वो किस हद तक आपत्तिजनक हो सकता है? लेकिन, जिस तरह से बिग ब्रदर बिग बॉस होकर अपने देश में लोकप्रिय हुआ और हम सबने बिग बॉस के घरों में होने वाले हंगामे देखे हैं तो ऐसा न हो कि इस सेक्स चैंपियनशिप के भी कुछ अश्लील हँगामों से हमें दो-चार होना पड़े। और अगर ऐसा हुआ तो यह एक खतरनाक बात होगी। यह दुनिया हमारी है। हमें ही बचानी है ये दुनिया। सेक्स नितांत निजी उपक्रम है, इसे सार्वजनिक मंच देकर हम किस तरह के खुलेपन की हिमायत कर रहे हैं? जैसा कि आयोजनकर्ताओं ने कहा कि इससे समाज में खुलापन आएगा और लोग सेक्स को लेकर सहज हो सकेंगे। क्या वाकई? यह कैसी सेक्स क्रांति है?

इंटरव्यू

लोकप्रिय अभिनेत्री तापसी पन्नू फ़िल्मों के अलावा अपने बयानों की वजह से भी सुर्खियों में रहती हैं। अब उन्होंने अपना प्रोडक्शन हाउस भी खोल लिया है। इस साल वो शाह रुख के साथ हिरानी की फ़िल्म डंकी में भी नज़र आयेंगी। आधी आबादी की संपादक निमिषा दीक्षित ने उनसे बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश-

तापसी पन्नू

सवाल: अब आपने भी प्रियंका चोपड़ा और अनुष्का शर्मा की तरह अपना प्रोडक्शन शुरू कर दिया है?

तापसी: हाँ अब तो एक फ़िल्म भी आ गई। कुछ साल पहले इंडस्ट्री में आउटसाइडर्स और इनसाइडर्स को लेकर काफी बातें होती थी। आउट साइडर्स को विक्टिम की तरह देखा जाता था। आउट साइडर्स को लोग लोअर क्लास का आदमी समझते थे। मैं आउटसाइडर्स हूं। मुझे ऐसे ही किरदार से पहचान मिली। फिर मैंने सोचा कि कुछ करना चाहिए और इसके बाद मैंने अपने प्रोडक्शन हाउस आउटसाइडर्स की नींव रखी। ताकि लोग आउटसाइडर्स को विक्टिम की तरह ना बोले।

सवाल: क्या आउटसाइडर्स की तरह महिला प्रधान फिल्मों का भी एक अलग संघर्ष है?

तापसी: बिल्कुल, जब भी मेरी फिल्म रिलीज हुई है तो उसे बाकी स्टार्स के मुकाबले कम स्क्रीन मिले हैं। चाहे वो बड़ा स्टार हो या छोटा स्टार, ज्यादा स्क्रीन मिले इसके लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। पहले मुझे बहुत बुरा लगता था। लेकिन अब बुरा नहीं लगता, अब मैं इस प्रयास में हूं कि लोगों की मानसिकता बदले और उम्मीद करती हूं कि एक दिन ऐसा समय आएगा। जब महिला प्रधान फिल्मों को लोग थियेटर में प्राथमिकता देंगे।

सवाल: डंकी में शाहरुख खान के साथ काम करने का अनुभव कैसा रहा?

तापसी: मैं अपने आप को काफी भाग्यशाली मानती हूं कि मैं 'डंकी' का हिस्सा हूं। राजकुमारी हिरानी की फिल्म हो और शाहरुख खान के साथ अगर रोमांस करने का मौका मिले तो दो सीन भी होता तो मैं कर लेती। यह फिल्म मुझे मेरे बलबूते पर मिली है, इस बात की बहुत खुशी है मुझे।

सवाल: अब किस निर्देशक के साथ काम करना चाहती हैं?

तापसी: मुझे मणिरत्नम के साथ काम करना है। जब मैंने अपनी साउथ की पहली फिल्म की थी तब से यह बात बोलती आई हूं। यह बात मैंने मणिरत्नम सर को भी बोली है और उन्होंने बहुत ही प्यार से जवाब दिया कि जल्दी काम करेंगे।

सवाल: कंगना को लेकर विवाद पर कुछ कहना चाहेंगी?

तापसी: मुझे कंगना से कोई परेशानी नहीं है। हो सकता है उन्हें मुझसे दिक्कत हो। अगर वो मुझे कहीं मिलीं तो मैं आगे बढ़कर उन्हें हैलो कहूँगी।

हलचल

महिला पहलवानों को मिला 1983 वर्ल्ड कप विजेता टीम समर्थन

बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे पहलवानों को अब दिग्गज भारतीय क्रिकेटरों का साथ मिला है। 1983 की विश्व विजेता टीम ने संयुक्त बयान जारी किया गया है। कपिल देव की अगुवाई वाली टीम के अहम सदस्य मदन लाल ने यौन शोषण के आरोपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ आवाज उठाने वाले पहलवानों से हो रहे व्यवहार पर चिंता जताई है। मदन लाल ने पहलवानों से गंगा में मेडल ना बहाने की अपील भी की थी। हालांकि बता दें कि किसानों के अनुरोध को मानते हुए पहलवानों ने मेडल गंगा में नहीं बहाया। 1983 विश्व कप विजेता टीम ने जारी बयान में कहा, "हम चैंपियन पहलवानों के साथ बदसलूकी की तस्वीरें देखकर काफी व्यथित हैं। इन मेडलों के पीछे बरसों के प्रयास, बलिदान, समर्पण और मेहनत शामिल है। वे उनका ही नहीं बल्कि देश का गौरव हैं। हम उनसे अनुरोध करते हैं कि इस मामले में आनन-फानन में फैसला नहीं ले और हम उम्मीद करते हैं कि उनकी शिकायतें सुनी जाएंगी और उनका हल निकाला जाएगा। कानून को अपना काम करने दीजिए।"

अस्पतालों में महिला के शवों के साथ रेप', मुर्दाघरों में CCTV कैमरे लगाने के निर्देश

अस्पतालों में महिलाओं के शवों के साथ रेप की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। अस्पताल कर्मी ही महिलाओं और युवतियों के साथ ऐसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। शिकायतें सामने आने के बाद कर्नाटक हाईकोर्ट ने राज्य के सभी सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों को मुर्दाघरों में सीसीटीवी कैमरे लगाने के निर्देश दिए हैं। आदेशों का पालन कराने के लिए हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को 6 महीने का समय दिया है। दरअसल, हत्या और नेक्रोफ़ीलिया (शवों के साथ रेप) के मामले की सुनवाई करते हुए कर्नाटक हाईकोर्ट की खंडपीठ ने कहा, "यह हमारे संज्ञान में लाया गया है कि अधिकांश सरकारी और निजी अस्पतालों में मोर्चरी में युवा महिलाओं के शवों के साथ इनकी रखवाली के लिए रखे गए कर्मी रेप करते हैं।" कर्नाटक हाईकोर्ट ने कहा कि इसे ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार के लिए यह सुनिश्चित करने का सही समय है कि ऐसे अपराध न हों, जिससे मृत महिला की गरिमा बनी रहे।

16 साल की रेप पीड़िता का होगा अबॉर्शन, कॉर्ड ने दी अनुमति

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हाईकोर्ट ने अपने महत्वपूर्ण आदेश में एक 16 साल की प्रेग्नेंट छात्रा का अबॉर्शन कराने अनुमति दी है। इस फैसले के साथ ही कोर्ट ने आरोपी को सजा मिले, इसके लिए भ्रूण का डीएनए कराने और उसे सुरक्षित रखने को कहा है। हाईकोर्ट ने रेप पीड़िता के पिता की फरियाद पर गर्भपात कराने की अनुमति दी है। जानकारी के अनुसार, खैरागढ़, छुईखदान, गंडई जिले की दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली रेप पीड़िता प्रेग्नेंट हो गई। उसके पिता ने टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी अधिनियम की धारा 3 और नियम 9 के तहत अपनी बेटी का अबॉर्शन कराने के लिए हाईकोर्ट में एडवोकेट समीर सिंह और रितेश वर्मा के माध्यम याचिका दायर की। याचिका में उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का हवाला देते हुए अबॉर्शन कराने की अनुमति मांगी। नाबालिग छात्रा के साथ दुष्कर्म जैसे गंभीर और जघन्य अपराध होने के बाद हाईकोर्ट ने मामले को गंभीरता से लिया और समय रहते गर्भपात कराने की अनुमति दी है।

ओडिशा के बालासोर में ट्रेन हादसे में 238 की मौत, रेल मंत्री भी पहुंचे

ओडिशा के बालासोर ज़िले के पास शुक्रवार की शाम भीषण ट्रेन हादसा हुआ जिसकी चपेट में तीन ट्रेनें आई हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि सबसे पहले हावड़ा-चेन्नई कोरोमंडल एक्सप्रेस की मालगाड़ी से टक्कर हुई। इसके बाद पटरी से उतरे डिब्बों से दूसरी ओर से आ रही यशवंतपुर-हावड़ा सुपरफ़ास्ट रेल गाड़ी टकरा गई। ये हादसा बालासोर के पास बाहानगा बाज़ार स्टेशन के नज़दीक हुआ है। दक्षिण-पूर्वी रेलवे के मुताबिक इस हादसे में मरने वालों की संख्या 238 हो गई है, वहीं 650 लोग घायल हुए हैं। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव दुर्घटनास्थल भी शनिवार को वहाँ पहुंचकर हालात का जायज लिया। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में कहा है कि 'रात से ही बचाव अभियान जारी है, सभी शोकाकुल परिवारों के साथ मेरी संवेदनाएं हैं। जहां पर भी सबसे बेहतर हेल्थ फ़ैसिलिटी होगी वो दी जाएगी। जांच के लिए एक हाई लेवल कमिटी की घोषणा हो चुकी है।'

वसुंधरा को लेकर बीजेपी ने अब बदला रवैया

कुछ समय पहले तक बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व की ओर से रुखा व्यवहार झेलने वालीं वसुंधरा राजे बीते बुधवार को राजस्थान के अजमेर में हुई बीजेपी की विशाल रैली में पीएम मोदी के ठीक बगल में मंच पर बैठी दिखाई दीं। इसके साथ-साथ इस रैली के लिए लगाए गए पोस्टरों में भी वसुंधरा राजे की तस्वीर नज़र आई। साल 2019 में अंबर से बीजेपी विधायक सतीश पूनिया के राजस्थान बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद बीजेपी की होर्डिंग्स से उनकी तस्वीर ग़ायब हो गई थी। इसके साथ ही राजे ने भी बीजेपी के कार्यक्रमों से दूरी बनाना शुरू कर दिया था। लेकिन रैली में वसुंधरा राजे न सिर्फ़ पोस्टरों, होर्डिंग और मंच पर दिखाई दीं बल्कि पीएम मोदी ने हाथ जोड़कर वसुंधरा राजे का अभिवादन स्वीकार किया है। इसके बाद दोनों के बीच कुछ देर तक बातचीत भी हुई है। इस रैली के दौरान ऐसे कई संकेत मिले हैं, जो बताते हैं कि बीजेपी आने वाले विधानसभा चुनाव की कमान वसुंधरा राजे को सौंप सकती है। इसे कर्नाटक में बीजेपी की हार के बाद बदली रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है।

शाहबाद डेयरी मर्डर के बाद क्या है परिवार की स्तिथि?

▪ दिलनवाज़ पाशा

शाहबाद डेयरी इलाक़े में घुसते ही मज़ार और मंदिर सटकर खड़े नज़र आते हैं। हरे और भगवा झंडों के बीच यहां तिरंगा लहरा रहा है। यहां से चंद क़दम की दूरी पर वो जगह है जहां 28 मई की रात 8 बजकर 45 मिनट (सीसीटीवी के मुताबिक) एक नाबालिग लड़की पर एक युवक बार-बार चाकू से वार करता है। चश्मदीद उसे हमले करते हुए देखते हैं और बिना कोई हस्तक्षेप किए आगे बढ़ जाते हैं। सीसीटीवी फुटेज में रात 8 बजकर 42 मिनट पर लड़की घटनास्थल की तरफ तेज़ क़दमों से आती दिखती है। इसके ठीक दो मिनट बाद पहले से इंतज़ार कर रहा साहिल खान साक्षी पर बार-बार चाकू से हमला करता है। पास ही खड़ा एक युवक एक बार हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है और फिर भाग जाता है। इस दौरान कई युवा वहीं खड़े देखते रहते हैं, लोग गुज़रते हैं, ना कोई हस्तक्षेप करता है और ना मदद। मौके से फरार अभियुक्त साहिल ख़ान को चौबीस घंटे के भीतर उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर से गिरफ़्तार कर लिया गया था। एक अन्य युवती इस घटनाक्रम की तस्दीक करते हुए कहती है, "लड़की ने मेरे भाई से मदद मांगी थी तो उसने साहिल को समझाया था कि इससे दूर रहे। वो लड़की को जान से मारने की धमकी दे रहा था।" स्थानीय लोगों के मुताबिक़ घटना के बाद अफ़रा-तफ़री का माहौल हो गया था और भीड़ इकट्ठा हो गई थी। लेकिन पुलिस के आने तक किसी ने लड़की को अस्पताल पहुंचाने की कोशिश नहीं की। कुछ लोगों का ये भी कहना था कि हमले के बाद लड़की ने मौके पर ही दम तोड़ दिया था।

शाहबाद डेयरी एक घनी आबादी वाला इलाक़ा है जिसके ई-ब्लॉक में कच्ची झुग्गियां हैं। पीड़िता का परिवार टिन की छत और एक कमरे वाली एक छोटी सी झुग्गी में रहता है। ये दलित परिवार मूल रूप से उत्तर प्रदेश के अयोध्या का है। पिता राज मिस्त्री हैं और मज़दूरी करते हैं। मां पास ही की एक स्क्रेप फ़ैक्ट्री में दिहाड़ी पर मज़दूरी करती थीं। एक छोटा भाई है जो पढ़ाई करता है। साक्षी का इंस्टाग्राम अकाउंट एक हंसमुख और ज़िंदादिल लड़की की तस्वीर पेश करता है। वो गानों पर रील पोस्ट किया करती थीं और कई डांस वीडियो भी उन्होंने पोस्ट किए है। पिता कहते हैं, "मेरी बेटी बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती थी और अपना खर्च ख़ुद उठाती थी। वो आगे चलकर वकील बनने का सपना देखती थी।" जब उनसे साहिल ख़ान के बारे में पूछा गया तो वो कहते हैं, "हमें उस लड़के के बारे में कोई जानकारी नहीं है। अगर जानकारी होती तो हम अपनी बेटी की जान बचाने के लिए ज़रूर क़दम उठाते।" पीड़िता की मां कमरे में बेसुध पड़ी हैं। राजनीतिक दलों के लोग उनसे आकर हाल पूछ रहे हैं लेकिन वो बोलने की स्थिति में नहीं हैं। इस टीन के कमरे में ऊपर से सीधी धूप पड़ रही है और अंदर घुटन है। तेज़ आवाज़ में कूलर चल रहा है। लेकिन भीतर भीड़ इतनी ज़्यादा है कि कूलर कोई राहत पहुंचाने में नाकाम हैं। साक्षी की मां बार-बार बेहोश हो जाती हैं। घर के बाहर पत्रकारों की भीड़ है जो किसी भी तरह भीतर घुसकर कुछ सवाल इस परिवार से कर लेना चाहते हैं।

कलंक: भ्रूण हत्या से बिहार सरकार चिंतित

▪ सुधीर सिंह

“पिछले कुछ महीनों में देश के अलग-अलग हिस्से से एक बार फिर कन्या भ्रूण हत्या की गूंज सुनाई देने लगी है। शुक्रवार को दिल्ली-एनसीआर में कई अवैध क्ल ीनिकों पर छापेमारी हुई है। इस बीच बिहार से एक ताज़ा रिपोर्ट।”

बिहार में सेक्स रेशियो में सुधार नहीं हो रहा है बल्कि यह गिरता जा रहा है। लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या कम होती जा रही है। इसकी वजह है कि बेटा बेटी में अभी भी फर्क किया जाता है। इतना ही नहीं गर्भ में पल रही कन्या को भ्रूण की अवस्था में मार दिया जाता है। कई जिलों में स्थिति बेहद चिंताजनक है। ऐसे में सरकार चिंतित है और सेक्स रेशियो में सुधार के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। प्रशासन को अल्ट्रासाउंड जांच केंद्रों पर नजर रखने को कहा गया है। भोजपुर में दो दर्जन से ज्यादा अल्ट्रासाउंड केंद्रों को सील किया गया है। 19 जिले विभाग की रडार पर हैं। प्रदेश के 19 जिलों में चल रहे अल्ट्रासाउंड सेंटरों की जांच कराई जाएगी। बिहार के मुख्य सचिव आमिर सुबहानी की अध्यक्षता में हुई बैठक के बाद इन जिलों में अल्ट्रासाउंड सेंटरों की जांच करने का निर्णय लिया गया है। इन 19 जिलों में लिंगानुपात (सेक्स रेशियो) कम है। ऐसे में अल्ट्रासाउंड सेंटर जांच के घेरे में हैं। राज्य में सेक्स रेशियो में गिरावट आ रही है। की संख्या कम हो रही है। सरकार द्वारा रोक लगाने के बावजूद अल्ट्रासाउंड केंद्रों पर लिंग जांच की जा रही है। इसके लिए अवैध उगाही भी की जाती है।

ये जिले रडार पर

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 2019-20 के अनुसार राज्य के 19 जिलों में एक हजार लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या 900 से भी कम है। ये जिले अररिया अरवल, औरंगाबाद, भागलपुर, भोजपुर, बक्सर, दरभंगा, गया, कटिहार, लखीसराय, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, नवादा, पश्चिमी चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, समस्तीपुर, सारण, शेखपुरा और सुपौल हैं। माना जा रहा है कि इन जिलों में या तो अवैध रूप से अल्ट्रासाउंड चल रहे हैं या वैध अल्ट्रासाउंड सेंटरों में अवैध कार्यों को अंजाम दिया जा रहा है। लोगों को जन्म के पहले ही लड़का-लड़की होने की जानकारी इन केन्द्रों से मिल जा रही है। ऐसे में इन पर नकेल कसाना जरूरी है।

डीएम को ही जांच का जिम्मा

पीसी एंड पीएनडीटी (गर्भधारण पूर्व और प्रसवपूर्व निदान-तकनीक-लिंग चयन प्रतिषेध) अधिनियम के तहत पहले सिविल सर्जन को अल्ट्रासाउंड सेंटरों की जांच करने का अधिकार दिया गया था। चूंकि वैध-अवैध सेंटरों की जांच के लिए पुलिस-प्रशासन की जरूरत होती, ऐसे में सिविल सर्जन को परेशानी हो सकती थी। इसलिए डीएम को ही जिला समुचित प्राधिकार का जिम्मा दे दिया गया। इसी के आलोक में मुख्य सचिव आमिर सुबहानी ने 19 जिलों के जिलाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से समीक्षा बैठक की। बैठक में तय हुआ कि इन 19 जिलों में चल रहे सभी अल्ट्रासाउंड सेंटरों की जांच की जाए।

भोजपुर में 29 अल्ट्रासाउंड सेंटर सील

मुख्य सचिव के निर्देश के आलोक में भोजपुर में अल्ट्रासाउंड जांच केंद्रों की गहन जांच का दो दिवसीय अभियान शुरू हुआ। पहले दिन की जांच में 29 अवैध अल्ट्रासाउंड केंद्रों को सील कर दिया गया। जिले के सभी प्रखंडों के लिए अलग-अलग जांच टीम बनायी गयी है। सभी टीमों ने एक साथ छापेमारी की। इससे अवैध अल्ट्रासाउंड संचालकों में हड़कंप मच गया। अफरा-तफरी का माहौल रहा। कई अल्ट्रासाउंड संचालक केंद्र बंद कर हो गये। जांच टीम ने स्वास्थ्य विभाग की गाइडलाइन के अनुसार कागजात, लाइसेंस और डॉक्टर की उपस्थिति की जांच की। इस दौरान पाया गया कि कई केंद्रों ने अल्ट्रासाउंड के लिए लाइसेंस नहीं लिया था और बिना लाइसेंस के ही केंद्र का संचालन कर रहे थे। कई केंद्रों पर डॉक्टर ही नहीं थे। कई जगहों पर डॉक्टर का नाम बोर्ड और पर्ची पर छपा था, लेकिन वे पटना में थे। उनके नाम पर आरा और अन्य प्रखंडों में टेक्नीशियन के भरोसे केंद्र संचालित किया जा रहा था।

एक महीने बाद की जाएगी समीक्षा

एक महीने तक इन 19 जिलों में चल रहे सभी अल्ट्रासाउंड सेंटरों की जांच की जाएगी। स्वास्थ्य विभाग की कोशिश हैं कि एक भी अवैध अल्ट्रासाउंड केंद्र का संचालन नहीं हो। साथ ही वैध अल्ट्रासाउंड केंद्र में अवैध कार्य को अंजाम नहीं दिया जाए। यानी, जन्म के पहले परिजनों को लड़का या लड़की की जानकारी नहीं दी जाए। विभाग का मानना है कि इन प्रयासों से लिंगानुपात को सुधारा जा सकता है। विभाग आगामी एक महीने के बाद इन जिलों में हुई छापेमारी की समीक्षा करेगा और उसके अनुसार आगे की रणनीति तय होगी।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹55,255	₹72,376
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

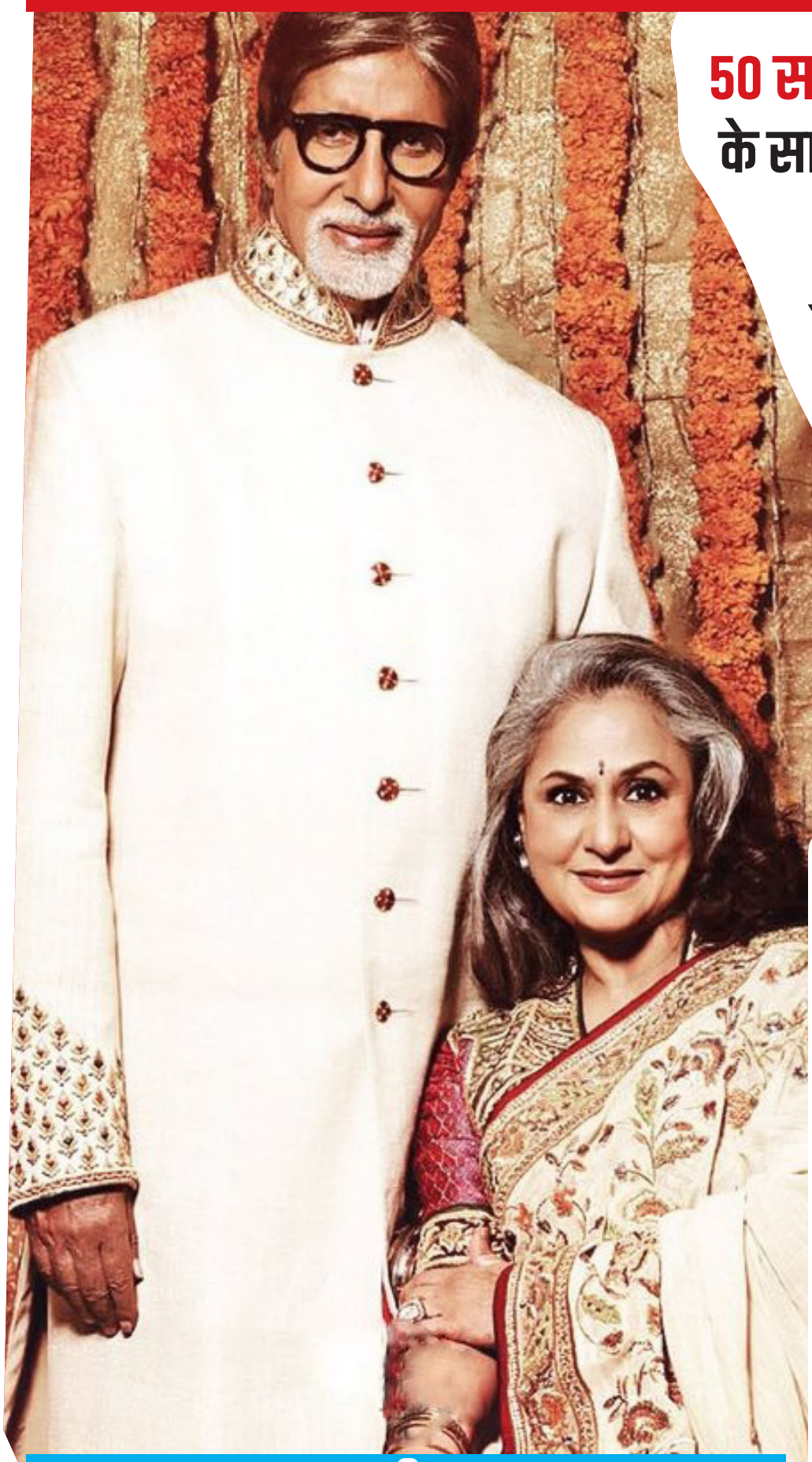

50 साल का रिश्ता: हर सुख-दुख में अमिताभ के साथ रहीं जया, टूटने नहीं दी रिश्ते की जंजीर

▪ रुचि वाजपेयी

बॉलीवुड के सबसे पावरफुल कपल अमिताभ बच्चन और जया बच्चन ने अपनी शादी के 50 साल पूरे कर लिए हैं। हम सब जानते हैं कि 3 जून 1973 को जया ने अमिताभ बच्चन का हाथ थामा था और तब से लेकर आज तक हर परिस्थिति में उनके साथ चट्टान की तरह खड़ी रहीं हैं।

पर्दे पर अपनी चंचल आंखों से बिना संवाद बोले ही सब कुछ कह जाने वाली जया बच्चन की मुलाकात अमिताभ बच्चन से साल 1970 में पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट में हुई। अमिताभ बच्चन का करियर इस वक्त शुरू हो गई। फिल्मी गलियारों में बातें होने लगी ये, 'रेखा' और भी गाढ़ी होती चली गई। जया को भविष्य में आने वाले इस तूफान का अंदाजा भी नहीं था। अखबारों और गॉसिप मैगजीन में इस इश्क को चटखारे लेकर लिखा जाने लगा। लेकिन उस वक्त भी एक भारतीय नारी की तरह जया ने अपने दाम्पत्य को बचा लिया और अपनी शादीशुदा जीवन को पटरी पर ले आईं।

26 जुलाई 1982 को बेंगलुरु में 'कुली' फिल्म की शूटिंग कर रहे थे। एक एक्शन सीन के दौरान अमिताभ बच्चन बुरी तरह घायल हो गए। तीन दिन तक डॉक्टरों को पता ही नहीं चला कि आखिर बिग बी को वो चोट लगी कहां हैं। उनकी धड़कन एक मिनट में 72 की जगह 180 की स्पीड से चलने लगी और वे कोमा में चले गए थे। ऑपरेशन के बाद भी अमिताभ बच्चन की हालत नाजुक बनी हुई थी। ब्रीच कैंडी अस्पताल के बाहर हजारों प्रशंसकों की भीड़ लगी रहती थी। देशभर में उनके लिए प्रार्थनाओं का दौर जारी था।

इस दौरान भी जया ने सत्यवान की सावित्री की तरह अपने पति की दिन रात सेवा की। हर कोई उनकी तारीफ कर रहा था। जाने कितने ही मंदिरों में उन्हें मत्था टेका, पूरे दिन हैरान,परेशान जया के साथ देशभर की दुआएं थीं। आखिरकार अमिताभ बच्चन ठीक होकर घर आ गए और जया बच्चन ने साबित कर दिया कि वो हर परिस्थिति में परिवार के साथ चट्टान की तरह खड़ी हैं।

90 के दशक में वो दौर भी आया जब अमिताभ बच्चन आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे। उन्होंने अपनी सारी पूंजी एक फिल्म कंपनी में लगाई और वो डूब गया। इस दौरान भी जया ने अमिताभ बच्चन को पूरा सपोर्ट दिया। बिग बी ने टीवी पर 'कौन बनेगा करोड़पति' करने के हां कहा और जया ने उनके इस फैसले का पूरी तरह से साथ दिया।

हिचकोले खा रहा था तो जया उस जमाना में सफलता के अर्श पर थीं। लाइन से फ्लॉप फिल्में देने वाले अमिताभ बच्चन के साथ फिल्म 'जंजीर' करने के लिए राजी होने वाली जया ने उनकी किस्मत बदल दी। फिल्म सुपरहिट रही और इनके बीच प्यार का अंकुर फूटा।

3 जून 1973 को दोनों ने परिवार की मांजूरी से सात फेरे लिए। जया बच्चन ने एक सफल अभिनेत्री होने के बावजूद फिल्मों से दूरी बना ली। फिल्म इंडस्ट्री में सफल होने के बाद काम छोड़कर घर संभालने का फैसला लेना किसी के लिए आसान नहीं होता है और जया के लिए भी ऐसा बिल्कुल नहीं रहा होगा। पर उन्होंने अपने परिवार के लिए ये परित्याग किया। लोगों ने बातें बनाईं, लेकिन जया ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

जया, घर और बच्चों की परवरिश में व्यस्त हो गई, कि तभी उनके और अमिताभ बच्चन के रिश्ते के बीच एक महीन सी 'रेखा' खिचनी

साहित्य

पुस्तक समीक्षा: ज़िंदगी की गुल्लक

ज़िंदगी की गुल्लक (क़िस्से कविताओं के), जैसा कि इस किताब का नाम है, बिल्कुल उसी तरह इसे बनाया गया है। इसे कविता संग्रह कहना इसलिए उचित नहीं होगा कि इसमें कविताएं तो हैं, पर वे अपनी कहानियों के साथ हैं। 21 कविताओं वाली इस किताब में मनीषा ने हर कविता के साथ, कविता से भी बड़ा एक ऐसा डिस्क्रिप्शन दिया है, जो उस कविता के जन्म लेने की कहानी है या फिर उस कविता में आए जज़्बात की ज़मीन है। यह किताब किसी डायरी की तरह प्रतीत होती है, जो आपको मनीषा के जीवन और उनकी सोच के भीतर झांकने का मौक़ा देती है। इस लिहाज से पुस्तक का नाम सही प्रतीत होता है कि यह उनके अनुभवों की गुल्लक है। जीवन और उसके अनुभव से जुड़ी ये कविताएं और इनकी कहानी रुचिकर हैं, पर वे आपके दिलो-दिमाग़ पर गहरी छाप छोड़ जाती हों, ऐसा नहीं होता। हां, इस किताब को पढ़ते हुए आप अपनी ज़िंदगी के किसी बीते हुए लम्हे

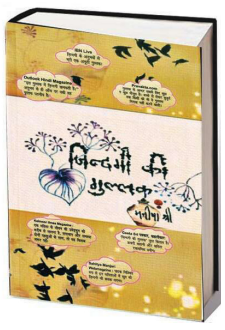

में ज़रूर पहुंच जाते हैं और उन्हें याद करने लगते हैं, जो पुस्तक को सार्थक बना देता है। पुस्तक की लेखिका ने ख़ुद भी स्पष्ट किया है कि ये उनके अंदर की वह आवाज़ है, जिसे उन्होंने अपनी डायरी में दबा रखा था। असमंजस, मां और टुकड़े इन तीन कविताओं के भाव अच्छे बन पड़े हैं। यह बात भी सच है कि कविता में कहानी और कहानी में कविता के रूप में यह एक अभिनव प्रयोग है। यदि आप एक नए प्रयोग के रूप में इस पुस्तक को पढ़ना चाहेंगे तो निराशा नहीं होगी।

पुस्तक: ज़िंदगी की गुल्लक
लेखिका: मनीषा श्री
मूल्य: ₹150 (पेपरबैक)
प्रकाशक: एपीएन प्रकाशन

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353